वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण अध्ययन

उर्मिला देवी

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण एक ऐतिहासिक महाकाव्य है और देश काल की हद में अपने को बाँधकर ही अपने युग की स्थितियों का,अपने समय के परिवेश के पर्यावरण का वर्णन किया है। अतएव पर्यावरण परि और आवरण के दो शब्दों से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है जो चारों ओर से ढ़का हुआ है। अर्थात् हम जीवधारियों के तथा वनस्पतियों के चारों ओर जो आवरण है उसे ही पर्यावरण कहते हैं।

वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण अध्ययन को मानवीकरण का एक रुप माना है। रामायण कालीन नदी को पवित्र मान उनका यथा समय विधि पूजन होता था और वे नदियाँ पवित्र मानकर उनका अनैतिक तरीके से उपयोग वर्जित था और नदियों का जल ही वर्षा का कारण होता था। वैसे भी नदी को उस समय एक देवता के रुप में मानकर ही उनका सेवन व सुरक्षा की जाती थी किन्तु अब नदी को एक जल स्रोत का साधन मानकर अन्धाधुन्ध अनैतिक उपयोग से प्रदूषण फैल रहा है। रामायण में नदी को देवी के रुप में वर्णित किया गया है और राम भी नदी के दर्शन को अपना सौभाग्य मानते हैं और नदी पार करने के लिए उनसे प्रार्थना भी की। उस समय नदी व वृक्ष पशु व पक्षी सारा स्थावर जङ्गम् की एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।